शहर के चमड़ा उत्पादों की नार्वे व यूरोपीय देशों में बढ़ेगी चमक

चीन के साथ हवाई यात्रा शुरू होने से चमड़ा, कपड़ा, पैकेजिंग इंजीनियरिंग उद्योग को कच्चा माल मिलने में बढ़ेगी सुविधा

तकनीकी विशेषज्ञों को बुलाना आसान हो सकेगा, कोरोना काल यानी 2020 से बंद थी आपसी हवाई सेवा

माई सिटी रिपोर्टर

कानपुर। स्विट्जरलैंड, नॉर्वे समेत यूरोप के देशों में कानपुर के चमड़ा उत्पादों की चमक बढ़ सकेगी। एक अक्तूबर से यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (ईएफटीए) के बीच मुक्त व्यापार समझौता लागू हो गया है। इसमें आइसलैंड, लिकटेंस्टीन, नॉर्वे और स्विट्जरलैंड शामिल हैं। 26 अक्तूबर से भारत चीन के बीच सीधी हवाई सेवा फिर से शुरू हो रही है।

इससे कानपुर के उद्योगों को खासा लाभ होगा। चमड़ा, कपड़ा, पैकेजिंग, इंजीनियरिंग में तकनीकी आदान-प्रदान बढ़ेगा। मशीनों की स्थापना में मदद मिलेगी। चीन से कोरोना काल 2020 के बाद से हवाई यात्रा पर रोक थी। यूके के साथ भी समझौता हो चुका है। इन समझौतों से चमड़ा उत्पादों का निर्यात दोगुना होने का अनुमान है। अभी अकेले यूके को 3000 हजार करोड़ का सालाना निर्यात होता है। स्विट्जरलैंड भी अच्छा बाजार है। यहां 150-200 करोड़ का निर्यात किया जाता है। यूरोपीय संघ के चार देशों के साथ करार से यूरोपीय यूनियन के शेष अन्य देशों में भी कारोबारी गतिविधियां बढ़ सकेंगी। खासकर जर्मनी को बड़े बाजार के रूप में देखा जा रहा है। एक दो साल में बाजार हिस्सा भी बढ़कर 10 प्रतिशत होने की उम्मीद है। कानपुर समेत देश के पास अब कंबोडिया, बांग्लादेश और तुर्किए के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए मूल्य निर्धारण किया जा सकेगा।

जानकारों का कहना है कि मुक्त बाजार समझौता होने से आयात और निर्यात शुल्क कम हो जाएगा। पहले चमड़ा और चमड़ा उत्पादों पर 16 प्रतिशत शुल्क लगता था। अब शून्य शुल्क लगेगा। जानकारों का कहना है कि स्विट्जरलैंड अच्छा बाजार है। यहां पर सालाना 150-200 करोड़ की सैडलरी, बेल्ट, पर्स और जूतों का निर्यात किया जाता है। समझौता से निर्यात दोगुना होने की संभावना है। नार्वे को 50-100 करोड़ का निर्यात होता है।

नई व्यवस्था से बाजार बढ़ेगा

चीन के साथ हवाई सेवा शुरू होने से चमड़ा उद्योग में तकनीक दक्षता बढ़ेगी। स्विट्जरलैंड, नार्वे बेल्ट, पर्स, बैग के बड़े बजार हैं। निश्चित तौर पर बाजार बढ़ेगा। नए-नए ब्रांडों के लिए बाजार खुलेगा। नई व्यवस्था से निर्यात बढ़ सकेगा। **- यादवेंद्र सचान, सदस्य, चर्म निर्यात परिषद और निर्यातक**

मील का पत्थर होंगे समझौते

ईएफटीए मील का पत्थर साबित होगा। यूके के साथ भी समझौता हो चुका है। यूरोपीय यूनियन के देशों में कानपुर के उत्पादों की पहुंच और बढ़ सकेगी। एक बड़ा बाजार मिल सकेगा।

-आलोक श्रीवास्तव, संयोजक, फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन